IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

“हिन्दू धर्म दर्शन एवं पर्यावरण में सम्बन्ध”

शोधार्थी - संदीप कुमार जायसवाल
(शिक्षक शिक्षा विभाग)
टी0 डी0 कॉलेज जौनपुर

हिन्दू धर्म एवं पर्यावरण का गहरा सम्बन्ध है, हिन्दू धर्म में प्रकृति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। हिन्दू धर्म दर्शन में पौराणिक काल से ही विशेष महत्व दिया गया है। चूँकि भारत त्योाहारों का भी देश माना जाता है और इन त्योहारों के माध्यम से ही पर्यावरण के विभिन्न घटकों को संरक्षित रखने का प्रयास किया जाता रहा है। भारतीय दर्शन एवं धर्म ग्रंथों में पर्यावरणीय तत्वों को देवतुल्य मानकर उनके महत्व को स्वीकार किया गया है। ‘मत्स्य पुराण’ में कहा गया है कि-

दश कूप समो वापी, दशवापी समो ह्रदः।
दशह्रद समो पुत्रः, दशपुत्र समो द्रुमः।।[1]

अर्थात दस कुँओं के बराबर एक बावड़ी है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है व दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष है।

वैदिक काल से ही भारत में पर्यावरण अवबोध की परम्परा रही है, प्राचीन भारतीय धर्म ग्रंथो में विभिन्न प्राकृतिक संसाधनो का वर्णन किया गया है।[2] सूर्य, वायु, जल, वनस्पति, भूमि आदि को सदैव देवतुल्य माना गया है। सूर्य देवता को सम्पूर्ण जगत की आत्मा कहा जाता है। साधु-संतो और मुनियों को वन बड़े प्रिय थे। वे समाज के कोलाहल से दूर जंगलों में कुटिया बनाकर रहते थे। वे लोग पड़-पौधों, पशु-पक्षियों और जंगली जीवन जंतुओं को मनुष्य का मित्र मानते थे।

महाकवि कालीदास ने ‘अभिज्ञानशाकुन्तलम्’ में इसी भावना को बड़े सुंदर तरिके से अभिव्यक्त किया है। जब कण्व ऋषि की पुत्रि शकुन्तला अपने पति के घर जा रही होती है तो वह आश्रम के पेड़-पौधों और जानवरों से अश्रुपरित नयनो से विदाई लेती हैं।[3] इस प्रसंग से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उस समय के लोग अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने और उसके भरण पोषण में प्रकृति की उदारता को महसूस करते थे। सच कहा जाय तो सदियों से प्रकृति ने मनुष्य के

---

[1] मत्स्यपुराण

[3] कालीदास, अभिज्ञान शाकुन्तलम

रीति-रिवाजों, सभ्यता और संस्कृति को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। आज भी अनेक जनजातीय तथा अन्य समाजों में पेड़-पौधों का पूजन कर देवी-देवताओं को प्रसन्न करने की परम्परा प्रचलित है।

ब्रम्हा के द्वारा मानव सृष्टि का उल्लेख हमारे वेद, उपनिषद तथा पुराणों में मिलता है। मानव उत्पत्ति तथा प्रकृति का इतिहास और सम्बंध अत्यंत प्राचीन एवं प्रकृति की विकास यात्रा का लम्बा चरण हैं।

"जीवो ब्रहमैव नापरः"

अर्थात जीव ही ब्रम्ह है अन्य कोई नहीं। इस प्रकार ईश्वर और जीव में कोई अंतर नहीं है। जीव अपने सत्कर्मो तथा दिव्य गुणों के माध्यम से देव तुल्य बन जाता है।

हमारा पर्यावरण पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु और आकाश इन पाँच महाभूतों या तत्वों से निर्मित है। आरम्भ में मनुष्य इनके प्रचण्ड प्रभाव को देख चकित थें। ऐसे में यदि इनमें देवत्व के दर्शन की परम्परा चल पड़ी तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। भारतीय समाज मे यह एक स्वीकृत मान्यता के रूप में आज भी प्रचलित है। अग्नि, सूर्य, चन्द्र, आकाश, पृथ्वी और वायु आदि ईश्वर के प्रत्यक्ष तनु या शरीर कहे गये हैं। अनेकानेक देवी-देवताओं की संकल्पना प्रकृति के उपादानों से की जाती रही है, जो आज भी प्रचलित है।

हिंदू धर्म में पृथ्वी को देवी का रूप माना गया है। इसके अलावा इसके विभिन्न अवयव जैसे- पर्वत, नदी, जंगल, तालाब, वृक्ष, पशु-पक्षी आदि सभी को दैवीय कथाओं व पुराणों से जोड़कर देखा जाता है।

हिंदू ग्रंथ जैसे- भगवद्गीता में अनेक स्थानों पर कहा गया है कि ईश्वर सर्वव्यापी है तथा विभिन्न रूपों में सभी प्राणियों में विद्यमान है इसलिये व्यक्ति को सभी जीवों की रक्षा करनी चाहिये।

हिंदू धर्म में कर्म की प्रधानता पर बल दिया जाता है और यह विश्वास किया जाता है कि व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होता है। इसके अलावा व्यक्ति के कर्मों का प्रभाव प्रकृति पर भी पड़ता है अतः मानव जाति को प्रकृति तथा उसके विभिन्न जीवों की रक्षा करना चाहिये।

शिव पशुपति और पार्थिव हैं तो गणेश गजानन है। सीता जी पृथ्वी माता से निकली हैं। द्रौपदी यज्ञ की अग्नि से उपजी 'याज्ञसेनी' हैं।

प्राचीन भारत के नागरिक भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति सदैव तत्पर रहते थे यद्यपि यहाँ पर्यावरण संरक्षण अथवा नियंत्रण नामक किसी सिद्धांत का अभाव था। पर्यावरण की सेवा तथा सुरक्षा करना लोगों की जीवनचर्या थी। वैदिक काल में सूर्यास्त के पश्चात पेड़ की पत्ती तोड़ने की मनाही थी। बिना विशेष प्रयोजन के उस समय पेड़ नहीं काटे जा सकते थे।

सृष्टि में पदार्थों में संतुलन बनाए रखने के लिए यजुर्वेद में कहा गया है कि-

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षँ शान्ति:[4]
पृथिवी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति:।।
वनस्पतये: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति:
सर्व शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सा मा शान्तिरेधि।।
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:।।

उपरोक्त श्लोक में मानव को प्राकृतिक पदार्थों में शांति अर्थात संतुलन बनाए रखने का उपदेश दिया गया है।

'मकर संक्रान्ति, महाशिवरात्रि, होली, नवरात्र, वसंत पंचमी, गुड़ी पड़वा, वट पूर्णिमा, ओणम्, दीपावली, कार्तिक पूर्णिमा, देव प्रबोधिनी एकादशी, हरियाली तीज, गंगा दशहरा, छठ पूजा, शरद पूर्णिमा, अन्नकूट, शीतला सप्तमी, आदि सभी पर्वों पर प्रकृति के विभिन्न तत्वो के प्रति सेवा भाव ही वास्तव में प्रकृति संरक्षण का ही रूप है।[5]

हमारे पौराणिक शास्त्रों यथा वेद, उपनिषद, पुराण आदि में अग्नि, जल, वायु, भूमि आदि की पूजा एवं उपयोगिता का प्रावधान रखा गया है। इसके अतिरिक्त पीपल, तुलसी आदि के पेड़-पौधों को देवतुल्य समझ कर उनकी आराधना एवं पूजा का विधान रखा गया। अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी को अर्ध्य देने से तथा यज्ञों के माध्यम से आहूति देने पर इंद्रदेव प्रसन्न होकर वर्षा करते हैं, ऐसी मान्यता हिन्दू धर्म की मानी गई है, जो किसी न किसी रूप में वातावरण को शुद्ध करने से जुड़ी हुई थी।

पर्यावरण को सामान्यतः भौतिक पर्यावरण के अर्थ में ही लिया जाता है किंतु वह समस्त वातावरण जिस पर मनुष्य का जीवन आधारित है पर्यावरण कहलाता है, इसे ही पारिस्थितिक तंत्र भी कहते हैं।[6] मनुष्य के सामाजिक पर्यावरण के अंतर्गत मनुष्य का सामाजिक संस्थाओं से संबंध होता है जो उसका सामाजिक पर्यावरण निर्मित करते हैं। मनुष्य के सांस्कृतिक पर्यावरण में उसके जीवन मूल्य, मान्यताएं, दर्शन, साहित्य कला, विरासत आदि समस्त सांस्कृतिक वातावरण सामाजिक जीवन के अभिन्न अंग के रूप में सम्मिलित होते हैं।[7]

आज हमारी संस्कृति में सदा से मान्यता प्राप्त हमारे अपरिहार्य पर्यावरणीय तत्व जल तथा वायु की सुचिता निरंतर विकृति और अब अपघटन की ओर अग्रसर है। जल तथा वायु को प्रदूषित होने से बचाने के अतिरिक्त उनका अव्यय होने से भी रोकने की आवश्यकता है। जब जीवन में जल तथा वायु के प्रति हमारी आस्था हमारे भाव, व्यवहार, दर्शन, हमारे संस्कार बनने लगते हैं तो बस वहीं से हमारे पर्यावरण संसाधनों के अव्यय पर रोक के साथ उनके संरक्षण की मनोवृत्ति को प्रश्रय मिलना आरंभ हो जाता है।[8]

---

[4] यजुर्वेद, 36/17

[5] अमर उजाला,2020 नवम्बर 24

[6] एम0 के0 गोयल(2009), पर्यावरण शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, नई दिल्ली

[7] आर0 पी0 ठाकुर(2008), पारिस्थितिकी संतुलन, कोमल प्रसाद प्रकाशन मन्दिर, आगरा

[8] डॉ0 श्रुति मिश्रा(2021), बीएचयू वाराणसी, शोध पत्र- भारतीय दर्शन में पर्यावरणीय विमर्श